International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 209-210

भारत के सन्दर्भ में समाजवाद

अखिलेश त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

वैश्विक क्षितिज पर समाजवाद अथवा समाजवादी आन्दोलन का समारम्भ वैज्ञानिक वैश्विक क्षितिज पर समाजवाद एवं समाजवादी आन्दोलन का समारम्भ वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता कार्लमार्क्स से होता है।[१] प्रत्युत् भारत में सुदूर अतीत में समाजवादी भावबोध के दर्शन होते हैं। यदि भारतीय राजनीतिक साहित्य का सूक्ष्म निरीक्षण करें तो परिज्ञात होता है कि लोकमंगल की पवित्रा भावना हमारी संहिताओं में सभ्यता के समारम्भ से ही विद्यमान थी। ऋग्वेद संहिता में दान की व्यवस्था का यशोगान तथा कृपण की निन्दा की गयी है तथा साथ ही धन के समान वितरण का अनुसमर्थन किया गया है। ऋग्वेद संहिता के अनुसार, ''इन्द्र देवता कृपणधनी से मित्राता नहीं करता प्रत्युत् उसके धन को नष्ट कर देता है तथा उसे नग्न करके मार डालता है।[२] एक अन्य स्थल पर पूषा देवता से प्रार्थना की गयी है, ''हे पूषा देव जो दान नहीं करना चाहता, उसे आप देने के लिए उत्प्रेरित कीजिए, कृपण के मन को मृदुल कीजिए।' ऋग्वेद के दसवें मण्डल (सूक्त 11 मंत्रा 5) में इस बात का पक्षपोषण किया गया है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न मनुष्यों का यह कर्त्तव्य है कि वह मांगने वाले को धन प्रदत्त करे, ऐसा दान दाता दूरदर्शी बने, उसकी दृष्टि दूर संवेदी बने, सम्पत्ति किसी एक के पास स्थिर न रह कर रथ के पहियों की भाँति घूमती रहे। एक दूसरे में अन्तर्निहित होती रहे।''[३]

ऋग्वेद संहिता, श्री मद्भगवतद्गीता तथा मनुस्मृति में उस व्यक्ति की घोर निन्दा की गयी जो अपनी सम्पत्ति मात्रा को अपने उपभोग में लाता है तथा दूसरे व्यक्ति को परिदत्त नहीं करता है। ऐसे व्यक्ति को पापी की संज्ञा से अभिहित किया गया है। ऋग्वेद संहिता में एक स्थल पर कहा गया, ''हृदय हीन व्यक्ति से अन्न प्राप्त करना व्यर्थ है। यह सत्य है कि यह उस अन्न का वध है जो अपने अन्न से न अपना पोषण करता है न अपने मित्रा का। ऐसा व्यक्ति पाप का भागी होता है।''[४] ऋग्वेद संहिता की इसी भावना का श्रीमद्भगवद्गीता एवं मनुस्मृति में अनुसमर्थन किया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता एवं मनुस्मृति में परोपकार के कार्यों को करने का पक्षपोषण किया गया है। यज्ञ करके उसके शेष भाग को अपने उपयोग के लिए प्रयुक्त करने वाला सज्जन समस्त पापों से मुक्त हो जाता है तथा जो यज्ञ नहीं करते हैं तथा अपने अन्न का उपयोग स्व के लिए करते हैं परमार्थ के लिए नहीं करते वे पाप कर्म से युक्त होते हैं।[५]

वैदिक साहित्य में समान वितरण का सम्भवतः सबसे स्पष्ट उल्लेख सामंजस्य सूक्त (अथर्ववेद ३ध्20) में है। आपका जल पीने का स्थान समान हो, सब में अन्न का वितरण एक जैसा हो (समानी प्रपा सह यो अन्न भागः) है।[६] इसी सूक्त में वर्तमान समाजवादियों के आदर्श का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है कि, ''तुम सबको एक साथ मिलकर चलने वाला एक मन तथा समान रूप में बाँट कर एक साथ भोजन करने वाला बनना है।''[७]

महात्मा गांधी ने लिखा है कि समाजवाद ही नहीं साम्यवाद भी ईशोपनिषद् के पहले मंत्रा में स्पष्ट है। मंत्रा का अर्थान्वयन इस प्रकार है कि ''जगत में जो कुछ है वह सब ईश्वर द्वारा बनाया हुआ है, इसलिए उसके नाम से त्याग करके तू उपभोग करता जा, किसी के धन के प्रति लालसा न रख।''[८]

भारत के प्राचीन ग्रंथों में जो लोक कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना मिलती है, वह उपर्युक्त मंगलमय भावना पर अवलम्बित है। आधुनिक युग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सन्त विनोबा भावे ने इसी मंगलमयी भावना या सर्वोदय के प्रवर्तन का प्रयास किया। इस प्रकार भारत में वैदिक काल से आधुनिक काल के सर्वोदय तक वास्तविक समाजवाद की प्रतिस्थापना के लिए अनवरत् प्रयास होता रहा है। भारतीय समाजवाद की अवधारणा अध्यात्म एवं सत्य पर अवलम्बित है।[९] भारत के इस मौलिक समाजवाद में वास्तविक आध्यात्मिक चेतना की सम्प्राप्ति के लिए निर्गुण और सगुण की उपासना, निष्काम कर्म, ज्ञान आदि साधन माने गये हैं जिनके अनुप्रयोग से समत्व बुद्धि की प्राप्ति होती है। इस समाजवाद का श्रेय, प्रेय तथा पाथेय था अनासक्ति और अपरिग्रह। परन्तु भारत का समाजवाद कार्ल मार्क्स से अभिप्रेरणा प्राप्त करता हुआ जनशक्ति और विधि द्वारा सम्पत्ति की संस्था का उन्मूलन करके स्वतंत्रा समाजवाद की प्रतिस्थापना को अपना सुनिश्चित ध्येय बनाया। डॉ0 राम मनोहर लोहिया के अनुसार, ''समाजवादी आन्दोलन की शुरुआत भारत और विश्व में एक अर्थ में बहुत पहले ही हो जाती है, वह अर्थ है अनासक्ति की मिल्कियत और ऐसी चीजों के प्रति लगाव समाप्त करने का, मोह के परित्याग का, किन्तु जब से समाजवाद के ऊपर मार्क्स की छाप पड़ी, तबसे एक दूसरा अर्थ सामने आ गया। यह है– सम्पत्ति की संस्थाओं को समाप्त करने का, सम्पत्ति रहे ही नहीं, चाहे विधि से चाहे जनशक्ति से।''[१०]

संदर्भ ग्रन्थ

1. ऋग्वेद संहिता, अनुवाद : राधेश्याम खेमका, गीता प्रेस, गोरखपुर संवत 2045, 3/25/7।
2. ऋग्वेद संहिता, 6/53/3।
3. ऋग्वेद संहिता, 1/117/5।
4. ऋग्वेद संहिता, 10/117/6।
5. ऋग्वेद संहिता, 10/117/6।

6. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर, एक सौ सत्तावनवां संस्करण, सं0 2051, 3/13।
7. हरिजन, 20 जनवरी सन् 1973 के अंक से।
8. समाजवादी आन्दोलन का इतिहास : डॉ0 राम मनोहर लोहिया, समता विद्यालय न्यास, हैदराबाद 1969, पृष्ठ संख्या 1।
9. ग्रोथ आफ सोशलिज्म इन इण्डिया : कु0 लक्ष्मी गुहा, ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली, 1956, पृष्ठ संख्या 265।
10. कान्स्टीट्यूशनल सिस्टम आफ द इण्डियन रिपब्लिक : के0 आर0 वाम्बवाल माडर्न पब्लिकेशन, अम्बाला कैण्ट 1971।